जॉन बिट्टो

नर्तकों ने बांधा समां

लॉरेन मॉनसेन

भारत के कुछ चुनिंदा नर्तकों का एक दल अभी हाल ही में अमेरिका की यात्रा पर था। इन युवा नर्तकों ने अपनी दिलकश प्रस्तुतियों से अमेरिकी जनता का मन मोह लिया। अमेरिकी विदेश विभाग के सांस्कृतिक भ्रमण कार्यक्रम के तहत ये कलाकार अमेरिका की यात्रा पर थे। इन कलाकारों ने अमेरिकी नृत्य निर्देशकों और नृत्य विधा के छात्रों के साथ अपनी कला और अपने अनुभवों का आदान-प्रदान करने के साथ ही नृत्य-संगीत की कक्षाओं में भी शिरकत की। इस दल का दौरा हालांकि बहुत भागदौड़ भरा था, बावजूद इसके इसकी प्रस्तुतियां दिल को छू लेने वाली थीं। इसके जरिए अमेरिकी जनता ने भारत की समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा के साथ एक जीवंत संवाद कायम किया।

भारत से आए दल के ये युवा कलाकार भारतीय शास्त्रीय नृत्यों को विशिष्ट अंदाज में पेश करने में सिद्धहस्त हैं। इन्हें वाशिंगटन में 22 से 28 अप्रैल तक और लॉस एंजिलीस में 29 अप्रैल से 6 मई तक मशहूर अभिनेत्री, नृत्यांगना और चर्चित नृत्य निर्देशिका डेबी एलन ने अमेरिकी नृत्य और संगीत की विभिन्न विधाओं से वाकिफ कराया। डेबी अमेरिकी फिल्मों और टीवी की एक मशहूर हस्ती हैं। अमेरिकी विदेश विभाग ने उन्हें अमेरिका की सांस्कृतिक राजदूत भी नियुक्त किया हुआ है। वह अंतर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान की प्रबल समर्थक हैं।

भारतीय कलाकारों के प्रशिक्षण के दौरान वाशिंगटन के जॉन एफ. केनेडी सेंटर फॉर परफॉर्मिंग आर्ट्स में हुई एक प्रेस ब्रीफिंग के दौरान एलन और आठ भारतीय कलाकारों की अमेरिकी विदेश विभाग तथा केनेडी सेंटर के अधिकारियों से भी मुलाकात हुई। इस दौरान सांस्कृतिक आदान-प्रदान के कार्यक्रमों के महत्व पर महत्वपूर्ण चर्चा हुई। एलन का कहना था कि इस तरह के कार्यक्रमों से संवाद के लिए एक मंच हासिल होता है। वह कहती हैं कि दुनिया के जिन हिस्सों में अमेरिका की आधिकारिक राजनयिक मौजूदगी नहीं है, वहां के बाशिंदों से भी कला की भाषा में बात की जा सकती है।

बातचीत के दौरान एलन अमेरिकी सांस्कृतिक राजदूत के तौर पर की गई अपनी पहली यात्रा का जिक्र करती हैं। तब वह चीन के दौरे पर गई थीं। वह कहती हैं कि उस यात्रा से उन्हें बहुत कुछ सीखने को मिला। 'मैंने चीन के कलाकारों को सिखाया कि नृत्य के दौरान कैसे आनंद, उल्लास और भावनाओं का प्रदर्शन किया जाए।' सांस्कृतिक राजदूत के तौर पर उनकी दूसरी यात्रा भारत की थी। ''भारत में मुझे इतिहास और कविता के रिश्ते को समझने की नई दृष्टि मिली। इससे मुझे भारत जैसे एक विशाल मुल्क की जटिल परंपराओं को समझने में भी आसानी हुई। भारत की नृत्य शैलियों, संगीत और भोजन ने तो मुझे तृप्त ही कर दिया।'' एलन के मुताबिक वह अमेरिकी नृत्य कंपनियों के आठ कुशल नर्तकों के साथ भारत गई थीं और अब भारत के आठ नर्तकों को अमेरिका लेकर आई हैं।

जॉन बिट्टो

वॉशिंगटन में भारतीय कलाकारों का खासा व्यस्त कार्यक्रम था और लॉस एंजिलीस में भी कमोबेश यही स्थिति रही। कैलिफोर्निया में भारतीय दल ने कई संग्रहालयों का भ्रमण किया और नृत्य कक्षाओं में शिरकत की। एलन के मुताबिक फुरसत के लम्हों में इन भारतीय कलाकारों ने अमेरिका के कुछ मशहूर क्लबों में नाइट लाइफ का लुत्फ भी उठाया। वह कहती हैं कि इस तरह के भ्रमण कार्यक्रमों के जरिए न सिर्फ कलाकारों को नया अनुभव मिलता है और नए माहौल से परिचय होता है, बल्कि युवा पीढ़ी को कला और संस्कृति से जोड़ने में भी मदद मिलती है। यह अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर समाज सेवा का काम

है। आप हर उस जगह पर पहुंच सकते हैं जहां आपकी सेवाओं की जरूरत होती है।

नृत्य की भाषा एक

जब भारतीय नर्तकों से उनके एक हफ्ते के वॉशिंगटन प्रवास के अनुभवों के बारे में बताने को कहा गया तो उन्होंने अमेरिकी कलाकारों के साथ कायम हुए अपने तालमेल पर खासा जोर दिया। वह तालमेल जो उनके बीच कक्षाओं और अन्य गतिविधियों के दौरान पैदा हुआ था। भारत की एक युवा नर्तकी का कहना था कि एक कलाकार के तौर पर हमने अपने बीच एक मजबूत अंतर्धारा का अनुभव किया। लगा कि कोई ऐसी अदृश्य ताकत है जो हमें भीतर से एक-दूसरे के साथ जोड़ रही है। हमें एक लय में बांध रही है। यह नर्तकी अमेरिका में नर्तकों और अन्य कलाकारों को हासिल सुविधाओं से भी खासी प्रभावित थी। उसका कहना था कि अमेरिका में कलाकारों को समाज, स्कूलों और कला से जुड़े अन्य कई बुनियादी क्षेत्रों की ओर से बहुत सहयोग मिलता है। इसके विपरीत भारत में हालात काफी कठिन हैं। वहां तो अक्सर एक कलाकार को अपना प्रशिक्षण जारी रखने और एक प्रोफेशनल के तौर पर खुद को स्थापित करने में ही भारी कवायद करनी पड़ जाती है। ''मैं अमेरिका में कलाकारों के समाज तक पहुंचने के कार्यक्रमों से बेहद प्रभावित हूं, जिनका भारत में अभाव है।'' इस युवा नर्तकी ने अमेरिकी शिक्षाविदों से आग्रह किया कि वे नृत्य के क्षेत्र में भी छात्रवृत्तियां शुरू करें। उसका दावा था कि यदि ऐसा संभव हुआ तो भारत के कई बेहद प्रतिभाशाली कलाकार अमेरिका में भी अपनी कला का प्रदर्शन कर सकेंगे।

बहुत से भारतीय नर्तक वाशिंगटन में शिक्षकों और नृत्य विधा के छात्रों से नृत्य की विभिन्न शैलियां सीखने का मौका मिलने से रोमांचित थे। दीप्ति पटेल का कहना था कि वाशिंगटन क्षेत्र के स्कूलों के पाठ्यक्रम से हम अभिभूत थे। हमने हॉवर्ड यूनिवर्सिटी के डांस स्टूडियो में जमैका का हिप-हॉप डांस और अफ्रीका का आदिवासी नृत्य सीखा। हमने बैले नृत्य की एडवांस कक्षाओं में भी हिस्सा लिया। हमने नृत्य की अफ्रो-अमेरिकी शैली भी सीखी। हम नृत्य के हर स्वरूप से प्यार करते हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह किस मुल्क का है। दीप्ति के अनुसार, अमेरिकी मेजबानों ने पूरी गर्मजोशी के साथ उनका और उनके साथियों का स्वागत किया। उन्हें अमेरिकी नृत्य छात्रों के मित्रवत व्यवहार से भी बेहद खुशी हुई, जो भारत के बारे में जानने के लिए बेहद इच्छुक थे। दीप्ति ने कहा कि ''मैं यहां के लोगों से प्यार करती हूं। वे सचमुच अद्भुत हैं।''

एक अन्य भारतीय नर्तक जॉन ब्रिट्टो ने अमेरिका में कला के बुनियादी ढांचे के बारे में हासिल जानकारी का खुलासा किया। उनके अनुसार, वॉशिंगटन में भारतीय दल को इस बात की जानकारी दी गई कि अमेरिका में कला का पूरा तंत्र किस तरह से संगठित है और कैसे उसे समाज तथा जनता का समर्थन हासिल है। केनेडी सेंटर में भारतीय नर्तकों को बहुत कुछ सीखने को मिला। वहां उन्हें कला के प्रबंधन और प्रशासन के बारे में जानकारी दी गई। ब्रिट्टो के मुताबिक, ''हमारे लिए यह जानकारी बहुत महत्व की थी। हम कला को समाज से जोड़ना चाहते हैं और कला संस्थानों को इस काम में हमारी मदद करनी चाहिए।'' ब्रिट्टो की बात को बढ़ाते हुए दीप्ति ने कहा, ''विश्वविद्यालय स्तर पर नृत्य की डिग्री लेने की बात अभी भारत में लोगों के गले नहीं उतरती। न ही इसके लिए वहां कोई इंतजाम हैं। लेकिन वॉशिंगटन की हॉवर्ड यूनिवर्सिटी में नृत्य के जिन छात्रों से हम मिले, वे अपने फन में माहिर थे।'' अमेरिकी विश्वविद्यालयों में नृत्य और कला की अन्य विधाओं में डिग्री कोर्स कराए जाते हैं। दीप्ति से सहमति जताते हुए ब्रिट्टो ने कहा कि भारत में आप विश्वविद्यालय स्तर पर नृत्य की शिक्षा नहीं ले सकते। वहां जो भी नृत्य स्टूडियो या अन्य संस्थान हैं, वे निजी प्रयासों का नतीजा हैं। वहां कला में जनता की सहभागिता या कलाकारों के जनता के बीच जाने का भी खास चलन नहीं है। दीप्ति के अनुसार वह चाहती हैं कि भारत में भी एक ऐसा सिस्टम बने जिसमें स्कूलों में नृत्य की शिक्षा मिले, नृत्य को सम्मान दिया जाए और वह एक अच्छा कॅरिअर विकल्प हो।

यह पूछे जाने पर कि क्या अमेरिका में सीखी गई नृत्य शैलियों का आप परंपरागत हिन्दुस्तानी नृत्य शैलियों में इस्तेमाल कर सकते हैं? भारतीय नर्तकों ने कहा कि वे चाहेंगे कि इसके लिए भारतीय शास्त्रीय नृत्य के मानकों को कुछ लचीला बनाया जाए। ब्रिट्टो ने बताया कि अभी हाल ही में उनको ब्राजील के शिक्षकों ने टैंगो तथा लैंबाडा नृत्य के गुर सिखाए। इन लैटिन अमेरिकी नृत्यों, हिप-हॉप, अफ्रीकी आदिवासी नृत्य और बैले से भारतीय नर्तकों और नृत्य निर्देशकों को अपनी कला को निखारने में मदद मिलेगी। दीप्ति ने जानकारी दी कि भारत में हिप-हॉप में बहुत रुचि ली जा रही है।

एलन का मानना था कि कला को बढ़ावा देने के लिए धन की बहुत जरूरत है और इसके लिए जोरशोर से अभियान चलाया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि बहुत से धनी औद्योगिक देशों में भी नृत्य कला की हालत बहुत अच्छी नहीं है। अमेरिका में भी देखा जाए तो कला के अन्य रूपों के मुकाबले नृत्य की हालत खानाबदोशों जैसी ही है। वह सुझाव देती हैं कि युवा नर्तकों को दूसरे देशों के नर्तकों के सतत संपर्क में रहना चाहिए। यह उपाय नृत्य की विधा को बढ़ावा देने में बेहद कारगर साबित हो सकता है। उनके मुताबिक अमेरिकी विदेश विभाग का सांस्कृतिक भ्रमण कार्यक्रम इस बात के पूरे इंतजाम करता है कि कलाकार अपने विचारों का आदान-प्रदान खुलकर कर सकें और अपनी प्रतिभा को निखार सकें। □

बाएं: सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के तहत भारत के आठ नर्तकों का दल वाशिंगटन गया। इन कलाकारों ने वहां दाना ताई सून बर्जीस की कंपनी के बेथेस्डा, मैरीलैंड स्थित जॉय ऑफ मोशन स्टूडियो में थोड़ी रिहर्सल की।
ऊपर: दाना ताई सून बर्जीस एंड कंपनी की कला निर्देशक (ऊपरी कतार में सबसे दाएं) और अन्य सदस्यों के साथ भारतीय कलाकार।
नीचे: सितंबर 2005 में डेबी एलन ने मुंबई में अपनी नृत्य कला का जादू बिखेरा। इसमें उनका साथ दिया नृत्य-निर्देशक श्यामक डावर ने। एलन अमेरिका की सांस्कृतिक राजदूत हैं और वह ही भारतीय कलाकारों को अमेरिका लेकर गईं।

लेखिका: *लॉरेन मानसेन वाशिंगटन फाइल की कार्यालय-लेखिका हैं।*

साभार: श्यामक डावर इंस्टीट्यूट ऑफ परफॉर्मिंग आर्ट